मधुबन ओम् शान्ति अंक 371 जून 2023

पत्र-पुष्प

"अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रह, निर्मान बन, सबको सम्मान देते चलो (19-05-23)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा अपने ऊंचे श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रह सबको सम्मान देने वाले, निमित्त और निर्मान आत्मायें, सृष्टि वृक्ष की आधारमूर्त पूर्वज आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रति समय प्यारे बापदादा ने हम बच्चों को अनेकानेक स्वमान दिये हैं, जिनकी स्मृति में रहने से देह अभिमान सहज समाप्त हो जाता है। बापदादा ने अपने साथ-साथ हम बच्चों को भी सारे विश्व की आत्माओं का पूर्वज बनाया है। बाबा कहते बच्चे, आप सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आधारमूर्त, उदाहरणमूर्त हो। सदा अपनी वंशावली को शक्तियों की सकाश देते रहो। आधारमूर्त पूर्वज आत्माओं को सदा इसी रूहानी फखुर में रह बेफिक्र बादशाह होकर रहना है कि जो हो रहा है वह बहुत अच्छा और जो होने वाला है वह और ही अच्छे ते अच्छा। सभी फिकरातों का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट के ताजधारी बनकर रहो।

बाबा सदा ही कहते बच्चे, जब आप अपने ऊंचे स्वमान की सीट पर स्थित होंगे तब दूसरे भी आपको सम्मान देंगे। जब तक आप अपने स्वमान की सीट पर नहीं तब तक माया भी आपके आगे सरेन्डर नहीं हो सकती। सीट पर सेट होना अर्थात् स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान समझना। स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है। जितना हम अपने स्वमान में रहते हैं उतना सर्व का सम्मान स्वत: प्राप्त होता है। वे अपमान और अभिमान की फीलिंग से भी मुक्त रहते हैं। वर्तमान समय मीठे बाबा की हम बच्चों प्रति यही शुभ आश है कि मेरे बच्चों का रिकार्ड सदा अच्छे से अच्छा हो। अपना रिकार्ड ठीक रखने की विधि भी बाबा बताते हैं बच्चे, सदा सबको रिगार्ड देते चलो।

बाबा हम बच्चों को वरदानी मूर्त बनने की भी यही विधि बताते हैं कि रोज़ सवेरे आंख खुलते इस स्वमान को स्मृति में लाओ कि "मैं परम पवित्र आत्मा हूँ" इस श्रेष्ठ स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो। सदा स्मृति रहे कि मैं हर कदम में पुण्य करने वाली पुण्य आत्मा, महान संकल्प, महान बोल, महान कर्म करने वाली महान आत्मा हूँ। जब इस आसन पर विराजमान होंगे तो कभी भी माया समीप आ नहीं सकती। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख सदा मायाजीत, कर्मेन्द्रिय जीत विजयी रहते हो ना!

बाकी इन गर्मियों की सीज़न में तो बापदादा के घर में वैरायटी सेवाओं के कार्यक्रम चल रहे हैं। बहुत अच्छी रौनक लगी हुई है। बाबा के सभी स्थान फुल हैं। एक ओर तपस्या की लहर है तो दूसरी ओर नये बाबा के बच्चों के लिए योग शिविर तथा विंग्स आदि में अनेकानेक बाबा के वारिस बच्चे आकर अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर रहे हैं। जुलाई मास से तो बरसात की सीज़न में शान्तिवन के विशाल डायमण्ड हॉल में टीचर्स बहिनों की तथा अलग-अलग ग्रुप की भट्ठियों के कार्यक्रम हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

श्रेष्ठ स्वमानधारी, सम्मानदाता बनो

1) स्वयं को श्रेष्ठ स्वमानधारी आत्मा समझ स्वमान में स्थित रहो तो स्वमान, देहभान को भुला देगा। आधा-कल्प देह-भान में रहे और देह-भान के कारण अल्पकाल के मान प्राप्त करने के भिखारी रहे। अभी बाप ने आकर स्वमानधारी बना दिया। तो उसी स्वमान में सदा स्थित रहो, यह स्वमान सर्व इच्छाओं को सहज ही सम्पन्न कर देगा।

2) स्वमानधारी सदा बेफिक्र बादशाह होते हैं, सर्व प्राप्ति-स्वरूप होते हैं। उसे अप्राप्ति की अविद्या होती है। स्वमानधारी सदा बाप के दिलतख्त-नशीन होते हैं क्योंकि बेफिक्र बादशाह हैं। किसी भी प्रकार की उन्हें फिकर हो नहीं सकती।

3) जैसे बाप सदा स्वमान में स्थित है इसी प्रकार समान आत्मायें भी स्वमान में रहेंगी, नीचे नहीं आयेंगी। हर कदम स्वमान का होगा। ऐसा स्वमानधारी बाप-समान है। स्वमान ही उनका सिंहासन होगा। भविष्य सिंहासन के पहले स्वमान के सिंहासन पर सदा कायम रहो, सिंहासन से कभी नीचे नहीं आना।

4) यदि कोई पुरुषार्थी अपनी कमज़ोरी से या अलबेलेपन के कारण नीचे गिर जाता है अर्थात् अपनी स्टेज से नीचे आ जाता है तो भी आप स्वमानधारी पुण्य आत्मा का काम है – गिरे हुए को उठाना, सहयोगी बनाना। स्वमानधारियों के संकल्प में भी यह नहीं आ सकता कि ये तो अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं, करेंगे तो जरूर पायेंगे। यह भी रोब अथवा अहंकार का अंश है जो स्वमानधारी आत्मा में नहीं हो सकता।

5) जैसे आजकल दुनिया में भी मान से स्वमान मिलता है, कोई प्रेजीडेन्ट है तो उनका मान बड़ा होने के कारण सम्मान भी ऐसा मिलता है। ऐसे आप बच्चे भी स्वमान से ही विश्व का महाराजन बनेंगे और इस स्वमान के कारण विश्व सम्मान देगी। तो सिर्फ अपने स्वमान में स्थित रहो तो सर्व प्राप्तियां हो जायेंगी।।

6) कोई छोटा है या बड़ा, महारथी है या प्यादा.. सर्व को सत्कार (सम्मान) की नज़र से देखो। सत्कार न देने वाले को भी सत्कार दो, ठुकराने वाले को भी ठिकाना दो, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाले बनो, तब कहेंगे सर्व के सत्कारी। ऐसे सत्कार देने वाले सर्व का सम्मान प्राप्त करते हैं।

7) मन-वचन-कर्म तीनों में ध्यान रखो कि एक तो सदा स्वमान में रहना है। दूसरा - हर कदम बाप के फ़रमान पर चलना है। तीसरा - सर्व के सम्पर्क में आने में सम्मान देना है। लेकिन ऐसे सम्मान दाता वही बनते हैं जो सदा निर्मान रहते हैं। मान लेने की इच्छा से परे होने के कारण, वे सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान मिलने का पात्र बन जाते हैं – यह आनादि नियम है।

8) सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो, निर्मान बन, सबको सम्मान दो तो यह देना ही लेना बन जायेगा। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्हास में लाकर आगे करना। तो सदा स्वमान में रहो और सबको सम्मान देते चलो।

9) जैसे कोई बड़ा ऑफिसर वा राजा जब स्वमान की सीट पर स्थित होता है तो दूसरे भी उसे सम्मान देते हैं। अगर स्वयं सीट पर नहीं हैं तो उसका ऑर्डर कोई नहीं मानते। ऐसे ही जब तक आप अपने स्वमान की सीट पर नहीं तो माया भी आपके आगे सरेन्डर नहीं हो सकती क्योंकि वह जानती है कि यह सीट पर सेट नहीं है। सीट पर सेट होना अर्थात् स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान समझना।

10) अपने रिकार्ड को ठीक रखने के लिए सर्व को रिगार्ड दो। जितना जो सर्व को रिगार्ड देता है उतना ही अपना रिकार्ड ठीक रख सकता है। दूसरे का रिगार्ड रखना अपना रिकार्ड बनाना है। जैसे यज्ञ के मददगार बनना ही मदद लेना है वैसे रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है।

11) जो बच्चे इस एक जन्म में स्वमानधारी होकर रहते हैं उनका सारा ही कल्प सम्मान होता है। उन्हें अपने राज्य में भी राज्य-अधिकारी बनने के कारण प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधा कल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। इस समय स्वयं बाप ने आप बच्चों को स्वमान दिया है इसलिए अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने हो। स्वमान और सम्मान - दोनों का आपस में सम्बन्ध है।

12) जब भी कोई शक्ति को आर्डर करते हो तो पहले देखो कि

स्मृति की सीट पर, स्वमान की सीट पर स्थित हूँ! ''मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ'' इस स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ तो सर्व शक्तियां आपके पास समय पर आने के लिए बंधी हुई हैं, इतने पावरफुल स्वमानधारी बनकर रहो।

13) जैसे बाप सदा स्वमान में स्थित है, इसी प्रकार समान आत्मायें भी स्वमान में होंगी, उनके स्वमान को देखकर सबके मुख से निकलेगा कि यह तो स्वमानधारी बाप-समान है। वे भविष्य सिंहासन के पहले स्वमान के सिंहासन पर कायम रहते हैं।

14) स्वमानधारी पुण्य आत्मा, रहमदिल दाता होने कारण – गिरे हुए को ऊंचा उठायेंगे। 'क्यों गिरा', 'गिरना ही चाहिए', 'कर्मो का फल भोग रहे हैं', 'करेंगे तो जरूर पायेंगे', स्वमानधारियों के संकल्प वा बोल इस प्रकार के नहीं हो सकते। उनमें रोब का अंश भी नहीं होगा। स्वमानधारी को देह-अभिमान कभी आ नहीं सकता।

15) इस एक जन्म के स्वमानधारी, सारा कल्प सम्मानधारी बन जाते हैं। उन्हें अपने राज्य में प्रजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और आधाकल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है और इस लास्ट जन्म में भक्तों द्वारा देव आत्मा वा शक्ति रूप का सम्मान देखते वा सुनते हैं। कितना सिक व प्रेम से अभी भी सब सम्मान दे रहे हैं!

16) सर्व आत्माओं के वृक्ष का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखायें अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म की आत्मायें भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हुए ना! ऐसे स्वमानधारी सदा अपने को मास्टर रचयिता समझ, अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न आदि पार्टधारी आत्मायें समझ सबको सम्मान दो, अपने ऊंचे स्वमान में रहो।

17) जो अपने स्वमान में रहता है उसे हद का मान प्राप्त करने की कभी इच्छा नहीं होती, वे इच्छा मात्रम् अविद्या हो जाते हैं। एक स्वमान में सर्व हद की इच्छायें समा जाती हैं, मांगने की आवश्यकता नहीं रहती।

18) स्वमानधारी सदा बेफिक्र बादशाह होता है, सर्व प्राप्ति-स्वरूप होता है। उसे अप्राप्ति की अविद्या होती है। तो सदा स्वमानधारी आत्मा हूँ – यह याद रखो। स्वमानधारी सदा बाप के दिल तख्तनशीन होता है क्योंकि बेफिक्र बादशाह है! दुनिया वालों के जीवन में कितनी फिक्र रहती हैं – उठेंगे तो भी फिक्र, सोयेंगे तो भी फिक्र और आप सदा बेफिक्र हो।

19) बापदादा आप बच्चों के स्वमान को देख सदा यही कहते वाह श्रेष्ठ स्वमानधारी, स्वराज्यधारी बच्चे वाह! हर एक बच्चे की विशेषता बाप को हर एक के मस्तक में चमकती हुई दिखाई देती है। आप भी अपनी विशेषता को जान, पहचान उसे विश्व सेवा में लगाते चलो। चेक करो - मैं प्रभु पसन्द, परिवार पसन्द कहाँ तक बना हूँ?

20) बापदादा द्वारा प्राप्त श्रेष्ठ आत्मा का स्वमान सदा स्मृति में रहे कि मैं साधारण आत्मा नहीं, परमात्म स्वमानधारी आत्मा हूँ। तो यह स्वमान हर संकल्प में, हर कर्म में सफलता अवश्य दिलायेगा। यह स्वमान, अभिमान को खत्म कर देता है क्योंकि स्वमान है श्रेष्ठ अभिमान। तो श्रेष्ठ अभिमान भिन्न-भिन्न अशुद्ध देह-अभिमान को समाप्त कर देता है।

21) स्वमानधारी आत्मा स्वत: ही सम्मान देने वाला सबके दिल में माननीय बन जाता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - आदि देव होते हुए, ड्रामा की फर्स्ट आत्मा होते हुए सदा बच्चों को सम्मान दिया। अपने से भी ज्यादा बच्चों का मान आत्माओं द्वारा दिलाया इसलिए हर एक बच्चे के दिल में ब्रह्मा बाप माननीय बनें। तो सम्मान देना अर्थात् दूसरे के दिल में दिल के स्नेह का बीज बोना।

22) बापदादा के पास जो भी बच्चा जैसा भी आया, कमजोर आया, संस्कार के वश आया, पापों का बोझ लेके आया, कड़े संस्कार लेकर आया, बापदादा ने हर बच्चे को किस नज़र से देखा! मेरा सिकीलधा लाडला बच्चा है, ईश्वरीय परिवार का बच्चा है। तो सम्मान दिया और आप स्वमानधारी बन गये। ऐसे फॉलो फादर।

23) अगर सहज सर्वगुण सम्पन्न बनना चाहते हो तो अपने स्वमान में रहो और सबको सम्मान दो। जैसे बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा स्वमान दिया है। हर एक बच्चे को पांव में गिरने से छुड़ाए सिर का ताज बनाया है। स्वयं को सदा ही प्यारे बच्चों का सेवाधारी कहलाया है। इतनी बड़ी अथॉरिटी का स्वमान बच्चों को दिया। तो जितना स्वमानधारी उतना ही निर्मान, सर्व के स्नेही बनो।

24) स्वमानधारी बच्चे हर आत्मा को ऐसे स्वमान से सिर्फ देखेंगे नहीं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे, क्योंकि स्वमान देह-अभिमान को मिटाने वाला है। जहाँ स्वमान होगा वहाँ देह का अभिमान नहीं होगा। देह-अभिमान को मिटाने का सहज साधन है सदा स्वमान में रहना।

25) स्वमानधारी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति, कृत्ति में हर एक की विशेषता समाई हुई होती है। जो भी बाप का बना वह विशेष आत्मा है, चाहे नम्बरवार है लेकिन दुनिया के कोटों में कोई है। ऐसे अपने को विशेष आत्मा समझ स्वमान में स्थित रहो।

26) बापदादा वर्तमान समय के प्रमाण हर बच्चे को एकाग्रता के रूप में स्वमानधारी स्वरूप में सदा देखने चाहते हैं। सबसे पहला स्वमान है - जिस बाप को याद करते रहे, उनके डायरेक्ट बच्चे बने हो, नम्बरवन सन्तान हो। बापदादा ने आप कोटों में से कोई बच्चों को कहाँ-कहाँ से चुनकर अपना बना लिया। 5 ही खण्डों से चुनकर डायरेक्ट बाप ने अपना बना लिया, तो इसी स्वमान में सदा रहो।

27) बापदादा ने अपने साथ-साथ बच्चों को भी सारे विश्व की आत्माओं को पहली रचना सर्व का पूर्वज बनाया है। आप विश्व के पूर्वज हो, पूज्य हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आधारमूर्त हो। बापदादा ने अपने हर बच्चे को विश्व का आधारमूर्त, उदाहरणमूर्त बनाया है। सदा इसी रूहानी फखुर में रह बेफिक्र बादशाह होकर रहो। यही संकल्प रहे कि जो हो रहा है वह बहुत अच्छा और जो होने वाला है वह और ही अच्छे ते अच्छा। सभी फिकरातों का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट के ताजधारी बनो।

28) सम्मान देने वाले निंदक को भी अपना मित्र समझते हैं। सिर्फ सम्मान देने वाले को अपना नहीं समझते लेकिन गाली देने वाले को भी अपना समझते क्योंकि सारी दुनिया ही अपना परिवार है। सर्व आत्माओं का तना आप ब्राह्मण हो। यह सारी शाखाएं अर्थात् भिन्न-भिन्न धर्म की आत्माएं भी मूल तना से निकली हैं। तो सभी अपने हैं, ऐसे अपने पन का सम्मान दो।

29) सदा स्वयं मास्टर रचयिता के स्वमानधारी बन सर्व के प्रति सम्मान-दाता बनो। सदा अपने को आदि देव ब्रह्मा के आदि रत्न आदि पार्टधारी आत्मा समझो। जैसे ब्रह्मा बाप ने छोटे, बड़े, युवा, समान हमजिन्स सबको एक समान सम्मान दिया। ऐसे फालो फादर करो।

30) ''मैं परम पवित्र आत्मा हूँ'' इस श्रेष्ठ स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो तो सहज वरदानी बन जायेंगे। स्मृति में रहना ही सीट वा आसन है। तो सदा स्मृति रहे कि मैं हर कदम में पुण्य करने वाली पुण्य आत्मा, महान संकल्प, महान बोल, महान कर्म करने वाली महान आत्मा हूँ। जब इस आसन पर विराजमान होंगे तो कभी भी माया समीप आ नहीं सकती।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"कर्म कर्ता के साथ-साथ कर्मयोगी स्थिति बनाओ "

(गुल्जार दादी - 28-3-07)

जैसे स्थान का महत्व होता है ऐसे स्थान के साथ स्थिति भी बहुत अच्छी चाहिए। स्थिति श्रेष्ठ है तो स्थान का महत्व है। अगर स्थिति श्रेष्ठ नहीं तो स्थान का भी महत्व नहीं। तो हमको चेक करना है कि हमारी स्थिति महान है या साधारण? हम सिर्फ कर्मकर्ता हैं या कर्म करते हुए बाबा जो स्थिति की बात कहता है वो है? कर्म करते कर्मयोगी स्थिति रहती है? क्योंकि कर्म के बिना तो कोई रह नहीं सकता है, इसलिए बाबा कहता है जितना हो सके बिजी रहो क्योंकि मन सेकण्ड में यहाँ से कहीं भी वर्ल्ड के किसी भी कोने में बिना टिकट के पहुँच सकता है। जो भी स्थान आपने देखा होगा वहाँ अगर पहुँचने चाहो तो वहाँ मन से एक सेकेण्ड में पहुँच सकते हो। तो कर्मणा सेवा भी जितना रूचि से यज्ञ सेवा समझकर करेंगे, उतना मन पुण्य का खाता बनाता रहेगा। सेवा तो हम सब करते हैं जो भी ड्यूटीज़ हैं वो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सिर्फ सेवा करते हैं या सेवा करते पुण्य जमा करते हैं? अगर कर्म करते हुए हमारा पुण्य का खाता जमा हो रहा है तो उसकी निशानी यह होगी कि तन मन से बहुत खुशी होगी और भरपूरता का नशा होगा। जैसे कोई साहूकार होता है तो उनकी शक्ल,

चाल-चलन से हम समझ जाते हैं कि यह रॉयल घर का है, यह थोड़ा हल्का है। तो बाबा भी आजकल हमसे क्या चाहता है? बाबा कहता है जितना आगे चलेंगे, समय समीप आता जा रहा है और आता जायेगा तो आपको वाणी की सेवा करने का टाइम ही नहीं होगा। न सुनने वालों को टाइम होगा, न सुनाने वालों को, लेकिन अन्त में आपकी सेवा जो चलनी है वो या तो चेहरे से चलन से या तो मन की शक्ति यानि मन्सा सेवा के आधार से उनकी सेवा होती रहेगी क्योंकि टाइम कम होगा।

तो सकाश देने की जो शक्ति है, वो पहले हमारे में वो सकाश बाबा द्वारा भरी हुई होगी तभी हम दूसरे को सकाश दे सकेंगे। तो चेक करो कि हमारे पास इतनी शक्तियाँ हैं जो हम शक्तियों की सकाश दूसरे को दे सकें? मन द्वारा, तन द्वारा तो है ही मुश्किल। तो यह चेकिंग करते हैं? क्योंकि बाबा ने इतला दे दिया है कि समय समीप आ रहा है और आयेगा अचानक, यह बाबा ने स्पष्ट सूचना दे दी है। तो होना अचानक है क्योंकि नम्बरवार माला है, जिसमें एक नम्बर सब तो लेंगे नहीं। तो इतनी हमारी तैयारी है? अचानक कुछ भी हो जाये तो मैं नष्टोमोहा हूँ? मित्र-सम्बन्धियों का मोह तो जल्दी कम हो जाता है, कोई कोई होगा जिसे बहुत ज्यादा हो। परन्तु अपने देहभान का मोह जो है वो मुश्किल ही कम होता है। तो बाबा ने कहा है कि अभी अपने चेहरे और चलन से दिखाई दें कि हाँ, यह कुछ विशेष आत्मा है। आपके चेहरे से ही पता पड़े कि यह कोई न्यारे हैं। तो हमारी स्थिति जो है, कर्म करते हुए कर्म की गति को जानते हुए चेक करना है कि श्रेष्ठ कर्म हैं या साधारण कर्म है या उल्टे कर्म हैं? समझो हमको यह स्मृति है ही नहीं कि यज्ञ सेवा है, साधारण रीति से जो ड्यूटी है वो बजा रहे हैं तो हमारे कर्म का फल क्या मिलेगा? साधारण ही मिलेगा ना। और यज्ञ सेवा है, यज्ञ सेवा का पुण्य कितना है वो हमारा जमा होगा! कर्मों की गति को हमेशा सामने रखना चाहिए - मैं कर्म कर रहा हूँ लेकिन इस कर्म की सफलता क्या है? नहीं तो कर्मों की गति ध्यान पर न होने से कर्म वा सेवा तो कर रहे हैं लेकिन पुण्य नहीं जमा होता है क्योंकि कर्मकर्ता तो दुनिया में बहुत हैं।

जो भी ऐसे काम होते हैं जो नहीं होने चाहिए, उस काम से आपको कभी भी सुख नहीं मिल सकता है। तो अगर कोई ऐसे कर्म करता है तो उसको वरदान नहीं मिलता है, श्राप मिलता है। भगवान का श्राप जिसके सिर पर आयेगा तो उसको खुशी कैसे होगी! आगे कैसे बढ़ेगा! उसके जीवन का लक्ष्य पूरा कैसे होगा? तो हमको बहुत सावधानी रखनी चाहिए। इसलिए कभी बेकायदे काम नहीं करना चाहिए क्योंकि उससे पुण्य जमा नहीं होगा। तो कोई भी कर्म ऐसा न हो, जो श्रीमत के विपरीत हो। अगर श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो श्रापित हो जाते हैं। अपनी विशेषता का, अपनी चार्ज वा ड्यूटी का नशा होने कारण, अभिमान के वश अन्दर बाहर युद्ध चलती रहती है। कोई तो हाथ, पाँव भी चला लेते हैं। फिर सोचते हैं कि हमारी सेफ्टी क्या है? हमारे पास कुछ पैसा होना चाहिए उसके लिए फिर कोई भी प्रयत्न करते हैं, एक पैसा एक पोजीशन - यह दोनों ही विकर्म कराते हैं। पोजीशन माना रोब, अपनी विशेषता का, ड्यूटी का, दिमाग का उससे गलतियाँ होती हैं। इसलिए दुनिया में भी कॉमन कहावत है कि पहले सोचो फिर करो। तो उस समय मानो हम सोचते नहीं हैं, तो बाबा ने कहा जिस समय कर्म करते हो उस समय सोचके करते हो तो वो श्रेष्ठ कर्म हो जाता है। अगर उस समय आपने सोचा नहीं तो पीछे वो सोच पश्चाताप के रूप में बदल जाता है। जैसे मानो मुझे यह करना नहीं चाहिए, उस समय मैंने सोचा नहीं, थोड़ा सोच चलेगा फिर भी कर लेती हूँ, तो कर तो लिया लेकिन मेरा मन पश्चाताप करता जरुर है, उसको हम दबा देते हैं क्योंकि उसमें बॉडीकान्सेस के कारण माया की थोड़ी प्रवेशता होती है। तो बाबा ने कहा कि समय पर अगर नहीं सोचा तो वो सोच बदलके पश्चाताप हो जाता है। इसलिए सोच-समझके कर्म करो तो पश्चाताप नहीं करना पड़ेगा। नहीं तो भगवान के घर में आके भी पश्चाताप ही जमा हो जायेगा। तो यह सजा बहुत कड़ी होती है। और समझदार, ज्ञानी भगवान के डायरेक्ट बच्चे उनको तो फीलिंग बहुत जल्दी आयेगी। जीवन की सारी गलतियाँ एक रोल के रूप में इकट्ठी होके सामने आवें तो कोई भी हो वो तो घबरायेगा ही। वो बहुत भयानक होता है फिर अन्दर का जो भय है वो उसकी सूरत में आता है। तो धर्मराज की सज़ायें माना कोई ऐसे गरम तवा आदि नहीं है, लेकिन महसूसता इतनी होती है जैसे एक घड़ी का एक मास का क्या एक वर्ष समान लगेगा। इसलिए हमको अपने कर्मों के ऊपर बहुत अटेन्शन देना चाहिए। कर्मों की गति बड़ी गुह्य है। हम साधारण रीति से कर्म करने में लग जाते हैं, चलो आज का दिन पूरा हुआ ठीक हो गया। अच्छा, थोड़ा योग लगा दिया, मुरली सुन ली, ड्यूटी अपनी कर ली, दिन पूरा हुआ लेकिन कैसा मेरा दिन पूरा हुआ? क्या जमा किया? क्योंकि जमा की बैंक सिर्फ संगम पर खुलती है और कोई युग में ऐसा नहीं होता है। तो इतना कर्मों के गति के ऊपर अटेन्शन है कि साधारण रीति से चलते हैं? कमाया कितना? जमा कितना हुआ? क्योंकि

अभी जमा किया हुआ ही फिर तो खायेंगे तो इतना अटेन्शन रहता है अपने ऊपर कि अभी नहीं जमा किया तो कभी नहीं हो सकता है। जितना किया जमा उतना ही मिलेगा, कमा नहीं सकते हैं। कमाई अभी है, सीधा बाबा ने कहा जमा की बैंक ही संगम पर खुलती है और कोई युग में खुलती नहीं है। कितनी वार्निंग दी बाबा ने, तो इतना अटेन्शन हमारा अपने ऊपर हो।

अगर हमारी चेकिंग अच्छी तरह से है तो हमारी छोटी-सी गलतियाँ भी बड़ी दिखाई देती हैं और अटेन्शन कम है तो बड़ी गलती के लिए भी कहेंगे यह तो होता ही है, चलता ही है, सम्पूर्ण थोड़ेही बने हैं, कोई भी नहीं बना है... यह बाबा ने कहा, इस प्रकार से माया को बिठा देते हो, पानी भी पिला देते हो तो माया की भी आदत पड़ जाती है। क्यों, क्या, कैसे की चाय-पानी माया को पिलाते हो इसलिए वो बैठ जाती है। तो बाबा ने वर्तमान समय बहुत अटेन्शन खिंचवाया है, अभी बाप का रूप है, टीचर का रूप है, अगर सतगुरू का रूप बाबा प्रैक्टिकल में धारणा करेगा तो यह सभी बातें जो हैं ना वो हमको खाने लगेंगी। अभी तो थोड़ा बाप का रूप है, तो प्यार भी मिलता है थोड़ा वो भी मिलता है फिर तो आफिशियली हिसाब किताब लेगा ना, बाबा। उस समय कुछ करने चाहेंगे तो कुछ नहीं कर सकेंगे। इसलिए हमारी यही आपसे रिक्वेस्ट है कि अपने कर्मों की चेकिंग जरुर करो। दूसरे नहीं करेंगे दूसरे तो उल्टा सुल्टा भी कह देंगे। मैं जो हूँ जैसा हूँ, मैं तो अपने मन को जानता हूँ और खुद के बिना और कोई नहीं जान सकते हैं। तो अभी अच्छी तरह से अपने आपकी रियलाइजेशन करो। तो हम सब मिल करके क्यों नहीं ऐसा वायुमण्डल बनायें जो बाबा हमको वरदान ही वरदान देवे। वाह बच्चे वाह! कह दे। ऐसे बाबा वाह बच्चे! कहता है लेकिन कर्मों की गति में वाह बच्चे वाह! कहे। कर्म और योगी की स्टेज हर समय हो तो कोई भी हमारे हाथ-पाँव से दृष्टि से मुख से कोई ऐसे कर्म न हों, जो मिक्स हों। तो सभी बाबा को क्या जवाब देंगे? ऐसा कोई समाचार नहीं आवे, क्योंकि छिपता तो कुछ है नहीं और पहले तो अपना मन खाता है, वेस्ट थॉट चलते हैं, खुशी गुम हो जाती है। तो सभी निर्विघ्न रहेंगे ना! कर्मों की गुह्यगति को पूर्ण जानने वाले हो ना! हम एक दो को उमंग-उल्हास दे करके बाबा को कहें बाबा आपने कहा और हमने किया, यह शब्द कितना अच्छा है। गे गे वाली भाषा नहीं करो। बाबा ने कहा हमने किया - यह भाषा हो। अरे, हम नहीं करेंगे तो कौन करेंगे? क्योंकि हमने बाबा की इतनी पालना ली है, इतनी सेवा की है। वो तो कोई एक आध होगा जो लास्ट में आके आगे जायेगा, बाकी तो हम नहीं होंगे तो कौन होंगे। इसमें पक्के बनो।

सरेण्डर माना अपना विवेक जो है वो श्रीमत के अण्डर हो। तो ऐसी बाबा को रिजल्ट देना। अगर कोई ऐसा कमाल कर दिखायेंगे तो बाबा सोने के पुष्पों की वर्षा करता है। और उस समय की खुशी ऐसी होती है जिसमें अतीन्द्रीय सुख मिलता है। तो अभी ऐसे अतीन्द्रिय सुख लो। बाबा को कहो कि हम हीं है और हम ही होंगे, इतना तो नशा रखना है। अच्छा।

दादी जानकी जी द्वारा उच्चारित अनमोल वचन

"सच्चाई और सत्य कर्म की शक्ति जीवन को हीरे जैसा मूल्यवान बना देती है"

(दादी जानकी जी (23-7-06)

ओम् शान्ति। संगमयुग डायमण्ड युग है इसलिए हम सब रोज सवेरे-सवेरे कहते हैं डायमण्ड मार्निंग। संसार में हीरे को सबसे अच्छा और कीमती माना जाता है। जेवर भी सच्चे सोने के बनायेंगे फिर उसमें हीरे रत्नों को सजायेंगे। सच्चाई की शक्ति, सत्य कर्म की शक्ति हीरे जैसा जीवन बना देती है। जीवन में जो वैल्यूज़ हैं वही बताती हैं कि यह हीरे जैसा है।

दुनिया के हर कोने में बाबा के बच्चे हैं, बाबा की उन पर नज़र है। कोई कहते हैं हम बाबा को ढूंढ रहे थे, कोई कहते हमें बाबा ने ढूँढा। हम तो मस्ती में घूम रहे थे, कमा रहे थे, खा रहे थे, गँवा रहे थे। यहाँ तो है बूंद-बूंद से तलाब। बाबा मेरा है, इसका एक बाप, उसका दूसरा नहीं। हम सबका बाप एक है, लक्ष्य एक है। बाबा का घर परमधाम हमारा घर है। उस घर से

आये हैं, अब वापस जाने का टाइम आ गया है, नाटक में पार्ट पूरा हुआ है। क्रियेटर, डायरेक्टर सब अभी स्टेज पर खड़े हो गये हैं। सबको वापस जाना है। हमको क्या करना है? परमधाम, निर्वाणधाम में जाना है तो यहाँ ही पावन बनना है, आवाज से परे रहना है। शान्तिधाम पावन धाम है, जहाँ कोई कर्म नहीं है, सम्बन्ध भी नहीं है।

यह शरीर भी क्या है, अभी मरा, जलाया फिर उसकी राख रखने में भी डर लगता है। कहते हैं सीधे दरिया में डाल... लेकिन ऐसे शरीर का अभिमान कितना है! पढ़ाई का, घर का, पैसे का, सुन्दरता का नशा कितना दिखाते हैं। परन्तु यह सब है नाशवान। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है - यह बाबा ने समझाया है। बाबा ने अन्दर की आंखें खोल दी हैं। न कोई मेरा है, न कोई मेरी है, न कोई तेरा है, न तेरी है।

एकाग्रता की शक्ति से बुद्धि को स्थिर बनाना है। मैं आत्मा परमात्मा की हूँ, स्वधर्म शान्त है, ड्रामा में हरेक का पार्ट अपना है। मेरा किसी से कोई हिसाब-किताब नहीं है। कर्म करना है पर पुराना कोई कर्मबन्धन नहीं है जो खींचे। कर्मबन्धन कोई पुश करेगा, कोई पुल करेगा। याद की शक्ति से कर्मबन्धन कट जाते हैं, विकर्म विनाश हो जाते हैं। अभी योग लगाते हैं, योग से शक्ति मिल रही है और कर्म से दुआयें मिल रही हैं। दुआयें कैसे मिलती हैं, यह रिहर्सल करके देखो। सबके दिलों से दुआ निकलती रहे, बाबा हमारी ऐसी लाइफ बना रहा है। सबकी दुआ मिले, बाबा की शक्ति मिले तो विश्व कल्याणकारी बन जायेंगे।

कल्याणकारी शिव भोलानाथ बाबा ने आत्मा का कल्याण कर दिया। कल्याण क्या हुआ? विकर्म विनाश हुए, कर्मबन्धन कट गये, आत्मा बड़ी शुद्ध-शान्त, बाबा से शक्ति ले रही है। तो उस आत्मा के अन्दर न संकल्प है, न विकल्प है। सबका कल्याण हो, सबका कल्याण हो। कोई फरियाद नहीं, कोई कम्पलेन नहीं।

तो बाबा कहते हैं बच्चे अपने आपको अन्दर चेक करते जाओ, बाबा से क्या-क्या मिला है, अभी और क्या-क्या लेना है। इतनी कमाई रोज़ हो रही है। बाबा का एक-एक बोल लाखों का है। ऐसे ही हमारा भी बोल हो।

सारे दिन में देखें मेरा अपने ऊपर पर कितना ध्यान है? जिनके लिए सोचते हो, जिनकी चिन्ता करते हो, उनको आपकी जरूरत ही नहीं है। भले आप उनकी चिन्ता में मर जाओ। कहेंगे फालतू चिन्ता करता है, मेरे को जो करना है मैं करूँगा। तो मैं क्यों चिन्ता करूँ!

राज्य पद पाना है तो यहाँ संस्कार बनाने हैं। संस्कार बनाने में पहले प्योरिटी आई, अशुद्धता का नाम निशान नहीं। सफेद कपड़े की लाज रखना। नाम ब्रह्माकुमार है, तो कर्म भी ऐसे हों जो देखकर सब कहें कि हाँ यह ब्रह्माकुमार है। मर्यादा को तोड़ा, अवज्ञा की तो रामराज्य स्थापन करने में सीता के मुआफ़िक परीक्षा पास करनी पड़ेगी। एक बारी चलायमान हुए तो राज्य पद गंवाया, चलायमानी हुई तो रावण को चांस मिला राम से अलग कर जेल में बिठाने का। फिर जो मेरा राम है, उसको ओ राम कहने लग जाते हैं। कितना अन्तर हो जाता है। फिर जेल से निकली तो राम इतना जल्दी नहीं कहेगा तुम मेरी हो। वह कहेगा पहले तपस्या करो, योग अग्नि से पार हो जाओ, फिर से उनका बनकर रहने में बड़ी तपस्या करनी पड़ेगी। तो चलायमानी दूर कर देती है, ''मेरा राम'' यह अनुभव करने नहीं देती है। डोलायमानी, अरे बड़ी तकलीफ आई है, शरीर को कुछ हो जाये, धन को कुछ हो जाये, सम्बन्ध चला जाये, अरे तेरा राम कहाँ गया। शरीर भी चला जाये तो भी मैं उसकी हूँ, उस खुशी में जाये ना। इनकी-उनकी थोड़ेही हूँ। इतना अन्तर-मन से, दिल से पुरुषार्थ करने वाले केवल एक परसेन्ट होंगे! बाबा की बेटी हो तो कैसी, बेटा हो तो कैसा। चलायमान-डोलायमान न हो, अंगद-हनुमान जैसा। कोई हिलाये तो भी न हिले। अरे बिना बात के भी हिलते रहते हैं। अन्दर अपने आप हिलते रहते हैं। कारण, बुद्धि स्थिर नहीं। अचल-अडोल रहने का अन्दर लक्ष्य हो। टू मैनी बातें न हों, सब कुछ है, कुछ नहीं चाहिए। है भी तो किसी को दे दो, काम में लगा दो। कोई दे तो सोचो क्या करेंगे, कहाँ रखेंगे। अभी-अभी आया खाया पूरा। पर डोलायमानी, कोई मेरी निन्दा करता है, कोई झूठ बोलता है, इसी चिन्ता में मरेगा तो क्या हाल होगा! बाबा का चेहरा शुरू से लेकर लास्ट तक एक जैसा ही रहा। बच्चे तो नटखट ही थे। कोई कहता था मैं जा रहा हूँ.... बाबा ने कभी गुस्सा किया ही नहीं। बाबा पर कोई गुस्सा भी करे तो भी बाबा जैसे शेष शैय्या पर लेटा हुआ है, विचार सागर मंथन कर रहा है। न पसन्द वाली बातें चेन्ज कर दें, तपस्या ऐसी जो नाग जैसा फूंक देने वाला हो उसको भी वैजयन्ती माला का मणका बना दे। किसकी कमी को न देख, ज्ञान के अन्दर गहराई में जाओ। मुख से कुछ न बोलो, पर शक्ल सब बोल दे। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

1) बाबा हम बच्चों को कहते बच्चे तुम मेरे नूरे रत्न हो, नूरे जहान हो। जहान के नूर हो। इन महावाक्यों में कितना रहस्य भरा हुआ है। सदा यह ध्यान रहे कि जहाँ हमें देख रहा है। भक्ति में ख्याल करते कि भगवान देख रहा है लेकिन अभी हम कहते जहान हमें देख रहा है। प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि सारे जहान का ध्यान हम लोगों पर है। पवित्रता के योगबल से, दैवीगुणों के आधार से हम सतयुगी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। भगवान करा रहा है। यह आटोमेटिक मुख से निकलता है। पवित्रता के बल से करा रहा है।

2) हमें एक बाबा को याद करके विश्व में एकता लानी है। यह कार्य भगवान करा रहा है, इंसान के बस की बात नहीं है। जास्ती गोरखधन्धे में जाने से, व्यर्थ सोचने से माथा खराब होता, हरदम दिल खुश, दिमाग ठण्डा हो तो बाबा अपना काम अच्छा करा लेगा। दिल से बाबा का काम करो तो बाबा की और परिवार की मदद मिलती है। गर्म दिमाग वाला कभी कोई काम नहीं कर सकता। ठण्डे दिमाग से काम अच्छा होगा। गर्म दिमाग वाला खुद भी बिगड़ेगा, काम भी बिगाड़ेगा। वह दिल को भी सुस्त, दु:खी, निराश बना देगा, इसलिए कुछ भी हो जाए हमें दिलशिकस्त नहीं होना है, दिल को आराम में रखना है। ऐसा कोई काम नहीं करना है जो दिल खाये। आराम की नींद न आये। किया हुआ खाता है इसलिए सिर्फ अपने दिल को खुश करने के लिए या जिसके साथ प्रेम है। उसको खुश करने के लिए नहीं करो लेकिन भगवान को खुश करने के लिए करो। मेरी दिल या फलाने की दिल खुश हो, यह सोचकर कुछ किया तो सूक्ष्म गलतियां हो सकती हैं। बाबा क्या कहता है, ज्ञान क्या कहता है, यह सोचकर किया तो कोई गलती नहीं हो सकती। आत्मा में शक्ति तब आती है जब राइट काम होता है- बिगड़ी को बनाने वाला, सत्य धर्म की स्थापना अर्थ कोई काम होता है। तो सदा याद रहे कि मेरे से ऐसा कोई काम न हो जो बनी हुई बात भी बिगड़ जाए।

3) लोग समझते हैं जिसकी उम्र बड़ी होती है उसका दिमाग काम नहीं करता। लेकिन भगवान के जो बच्चे हैं, उनको भगवान की गुप्त शक्ति मिलती रहती है। जो सोचते हैं कि इनको इतना निर्भय, बड़ी दिल-वाला बनाने वाला कौन है। हमारे में देह अभिमान का अंश भी न हो। हम छोटी-मोटी आशायें रखकर अपने आपको खुश न कर लें। बुद्धि में जरा भी किसी चीज की आकर्षण न हो। इस संसार में कुछ भी अच्छा नहीं। अच्छा वह है जिसे कोई इच्छा न हो। घर जाना है इसलिए उपराम रहना अच्छा है।

4) बाबा के जो बच्चे गुम हो गये थे, जो मूर्छित हो गये थे, वह सुरजीत हो गये, यह अच्छा लगता है। यह फैमिली अच्छी लगती है, बाकी कुछ अच्छा नहीं। तो हर एक अपने दिल से पूछे कि मुझे क्या अच्छा लगता है? अच्छा यह लगता है कि योगयुक्त स्थिति रहे। कोई भी बात हो जाए हमें कोई हिला न सके। जो भगवान ने महावीर बनने का पार्ट दिया है वह अच्छा लगता है। पास विद आनर होना अच्छा लगता है। ड्रामा की नॉलेज के आधार से अपने जीवन की इतनी रक्षा करो जो मान-अपमान का लेश भी न आये।

5) बाबा ने हम बच्चों को ड्रामा की नॉलेज इतनी अच्छी दी है जो एक सेकेण्ड भी किसी बात का ख्याल नहीं चलता। अगर हम अपनी स्थिति को अचल बनाकर रखना चाहते हैं तो तीन बातें साथ हों:- 1. सहनशक्ति। 2. समेटने की शक्ति और 3. समाने की शक्ति। यह तीनों शक्तियां साथ हैं तो ड्रामा पर अडोल रह सकते हैं। अगर एक भी शक्ति कम है तो स्थिति हिल सकती है।

6) बाकी यह प्रतिज्ञा पक्की हो कि बाबा हम आपके पक्के योगी बच्चे हैं, पवित्र हैं, पवित्र ही रहेंगे - इसी की प्रतिज्ञा सबको दिल से बहुत पक्की करनी है। जो इस प्रतिज्ञा में पक्के रहते हैं उन्हें बाबा की 100 गुणा दुआयें मिलती हैं। हाँ जी करने वाले को कहा जाता है आज्ञाकारी, उन पर माँ-बाप की दुआयें होती हैं क्योंकि आज्ञाकारी माना सपूत। तो सदैव आज्ञाकारी रहो।

7) जो भी हमारे नियम-मर्यादायें हैं, उन मर्यादाओं का जीवन में श्रृंगार करते अपनी उन्नति करते रहो और नशा रखो कि हम वही कल्प पहले वाले पाण्डव हैं, गोप हैं। गोप का अर्थ ही है जिससे भगवान से प्यार हो और कोई नहीं हो। गोप और गोपियां। तो कल्प पहले वाले गोप हो, पाण्डव हो। पक्के योगी, तपस्वी, त्यागी-वैरागी हो! यह सब सवाल खुद से पूछो और अपने आपको पक्का करो। सेवाधारी हो, कोई ईर्ष्या तो नहीं, कोई दुनिया याद तो नहीं आती? बुद्धि कहाँ बाहर तो नहीं जाती या भटकती? अच्छा।